इण्डियन फ़ेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स

(28 अक्टूबर 1950 में स्थापित एवं दिल्ली श्रम विभाग द्वारा पंजीकृत 1992)

यूनियन भवन, 1 गरूड विहार, षंकर मार्केट के पीछे, कनाट प्लेस, नई दिल्ली - 110001

अध्यक्ष का पता: 7 गुलिस्तान कालोनी, बंदरिया बाग, लखनऊ-226001 फोन: 0522.2238823 / 2235466

IFWJ Phone No.:011-23418871 Mob: +91 98186270330 / 9415000909 / 9880199099

E-mail : ifwj.media@gmail.com Website : www.ifwj.in

President : K. Vikram Rao
Secy.-Gen.: H.B. Madan Gowda
Treasurer : Shyambabu
Secy. (HQ.) : Vipin Dhuliya

27 मार्च 2016

सर्कुलर संख्या-1/सचिव-दिल्ली/मार्च 2016

आई.एफ.डब्लू.जे. की 5 सूत्रीय मांगें
तिब्बत और कश्मीर की हालत पर रोष
कर्नाटक में सम्पन्न 30वां अधिवेशन ऐतिहासिक

वर्किंग कमेटी के समस्त सदस्यों प्रदेश यूनियनों के अध्यक्ष एवं महासचिवों तथा विशेष आमंत्रितों को

प्रिय साथी

कार्यरत पत्रकारों पर बढ़ते हमलों को विभिन्न प्रदेशों से कर्नाटक आकर आई.एफ.डब्लू.जे. अधिवेशन में शिरकत कर रहे सैकड़ों नुमाइन्दों ने अत्यंत शोचनीय करार दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष कामरेड के. विक्रम राव के सभापतित्व में सम्पन्न इस तीसवें त्रिवार्षिकी सम्मेलन में (2 से 5 मार्च 2016) मीडिया कर्मियों ने भारतीय संसद से अनुरोध किया कि दण्ड संहिताओं में संशोधन द्वारा ऐसे हमलों को संज्ञेय अपराध करार दे। मोदी सरकार से सम्मेलन ने मांग की कि एक राष्ट्रीय आयोग का गठन कर मीडिया (प्रिन्ट तथा एलेक्ट्रानिक) की दशा का विशद् अध्ययन कराये तथा सुधार सुझाये। पिछला प्रेस आयोग इन्दिरा गांधी काबीना ने न्यायमूर्ति के.के. मैथ्यू की सदारत में अप्रैल 1980 में रचा था। तबसे विगत 35 वर्षों में मीडिया में बडे परिवर्तन हुये हैं। संदिग्ध और बेजान वर्तमान प्रेस काउंसिल को भंग कर एक यथार्थवादी प्रतिनिधित्वपूर्ण राष्ट्रीय मीडिया काउंसिल की स्थापना की भी मांग उठी।

श्रमजीवी प्रतिनिधियों ने अखबार मालिकों द्वारा अपने कार्मिकों को मजीठिया वेतनमानों से वंचित रखने पर रोष व्यक्त किया। राय थी कि संसद तथा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अनुमोदित निर्णय का उल्लंघन करनेवालों का वाजिब स्थान जेल है।

चार दिनों तक देशभर के इन पत्रकारजनों ने मीडिया से जुड़े विषयों पर मंथन किया। श्रीलंका प्रेस एसोसिएशन के 25 सदस्यीय शिष्ट मण्डल अध्यक्ष मुदिता करयाकरवाणा के नेतृत्व में आया। भारतीय प्रतिनिधि लोग 26 प्रदेशों से आये थे। सीमांत मणिपुर (थोटाशांग शाइजा व अन्य) से लेकर तिब्बत सीमास्थित देवभूमि केदारनाथ (कामरेड सुनील थपलियाल) तक। सबसे बड़ा दल (109 सदस्य) मध्य प्रदेश से कामरेड सलमान खान की रहनुमाई में आया। फिर आया तमिल नाडु, उत्तर प्रदेश, उडीसा आदि

का क्रम। संयोगवश इन प्रतिनिधियों की कुल संख्या (आयोजक कर्नाटक के 130 को छोड़कर) 786 थी। इस्लामी गणना में 786 के अर्थ है "बिस्मिल्ला" (दयावान अल्लाह के नाम पर प्रारंभ) हो। यह भावपूर्ण बात है क्योंकि सम्मेलन स्थल आदिचुनचुनागिरी कालभैरव वाला शैवतीर्थ है। घनी आबादीवाले बंगलूरू से 150 किलोमीटर दूर बसा, हरित पहाड़ियों से घिरा, मयूर उपवन से सटा यह नगर अरण्यनुमा है। यहां श्रमजीवी पत्रकारों को बौद्धिक क्रियाशीलता तथा नैसर्गिक सुकून मिला है। इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्विज्ञान संस्थान) का हजार सीटोंवाला नवीनीकृत सभास्थल, जो महान संत बालगंधर्व स्वामी के नाम पर है, नई दिल्ली के विज्ञान भवन से भव्यता तथा आयाम में मुकाबला करता है।

चार दिनों तक विचार मंथन तथा कन्नड सांस्कृतिक संध्या का लुत्फ लेने के बाद पत्रकारजन भारत के स्वच्छतम नगर मैसूर तथा कावेरी तट पर निर्मित वृन्दावन उद्यान भ्रमण पर गये। सुलतान टीपू का किला भी आकर्षण बना।

आई.एफ.डब्लू.जे. का तीसवां अधिवेशन विगत 29 सम्मेलनों से भिन्न रहा। इसका उद्घाटन कन्नड दैनिक विजयवाणी के संपादक हरिप्रसाद कोनमाणे ने किया। महास्वामी निर्मलानाथानन्द जी से आशिर्वचन मिला। चैन्नई आई.आई.टी. के टापर तथा मैसूर विश्वविद्यालय से इंजीनियर स्नातक (जहां उप्र के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव उनके सहपाठी थे) महास्वामी जी ने पत्रकारों से सत्य ही लिखने का आग्रह किया। बड़ा दुष्कर कार्य यह है। मानवाधिकार रक्षा काउंसिल तथा बंगलूरू एवं मैसूर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग द्वारा "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, पर आयोजित परिसंवाद ने अखबारी आजादी पर आसन्न खतरों का सटीक रेखांकन किया। बंगलूरू विश्वविद्यालय के जनसंचार विभागाध्यक्ष और कर्नाटक मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार डा. बी.के.रवि ने भाषायी माध्यमों के महत्व को निरूपित किया। समापन समारोह कन्नड दैनिक "विश्ववाणी" के संपादक विश्वनाथ भट्ट के ऊर्जापूर्ण भाषण से हुआ। सर्वोच्च न्यायालय के एडवोकेट ऑन रिकार्ड तथा आई.एफ.डब्लू.जे. के विधि परामर्शदाता अश्वनी कुमार दुबे ने वंचित पत्रकारों हेतु कानूनी राहत के क्शिय में बताया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में कामरेड के. विक्रम राव ने नकली बुद्धिजीवियों द्वारा कथित प्रगतिवादी नकाब पहनकर घनोपार्जन में जुट जाने की भर्त्सना की। यथार्थ में वे सब निखालिस प्रतिक्रियावादी हैं। कामरेड विक्रम राव ने कहा कि आज समाचारपत्र वाणिज्य की शाखा मात्र बन गये हैं। मुनाफाखोरों के क्रीत दास बन गये हैं। उन्होंने कम्युनिस्ट चीन के बहादुर पत्रकारों की श्लाघा की जो माओवादी अधिनायकवाद से जूझ रहे हैं। उन्होंने भारतीय मीडिया से अनुरोध किया कि वे तिब्बत में हो रहे मानवधिकार दमन पर राष्ट्रीय ध्यान केन्द्रित करें। कश्मीर पर कामरेड विक्रम राव ने पी.वी नरसिम्हा राव के समय संसद द्वारा (22 फरवरी 1994) पारित सर्वसम्मतिवाले प्रस्ताव का अनुमोदन किया जिसके अनुसार केवल इस्लामी पाकिस्तान द्वारा कब्जियाये उत्तर कश्मीर की आजादी ही मात्र मुद्दा है जिसे हल करना है। भारतीय कश्मीर की आजादी का नारा लगानेवाले देशद्रोही हिन्दुस्तानियों की भर्त्सना की। भारत की सेक्युलर इमारत की नींव का पत्थर है कश्मीर, उन्होंने कहा।

कर्नाटक के कांग्रेसी मुख्यमंत्री और पुराने लोहियावादी सोशलिस्ट सिद्धरामय्या द्वारा अधिवेशन (150 किलोमीटर दूर) का उद्घाटन होना था। मगर विधान मण्डल में उनका (3 मार्च) बजट पेश होना था। अतः मुख्यमंत्री ने आई.एफ.डब्लू.जे. प्रतिनिधिमण्डल को प्रीतिभेंट हेतु अपने कार्यालय आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री ने याद दिलाया कि गत अप्रैल माह में वे आई.एफ.डब्लू.जे. की कर्नाटक इकाई के 32वें सम्मेलन का उद्घाटन करने हासन नगर गये थे जहां IFWJ अध्यक्ष के.विक्रम राव मुख्य अतिथि थे।

इस तीसवें त्रिवार्षिकी अधिवेशन का कीर्तिमान यह रहा कि तीन जनपदों में यह केंद्रित था। जैनियों के महान तीर्थस्थल श्रवणबेलगोला (गोमतेश्वर की विराट मूर्ति के लिए प्रसिद्ध जहां मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त ने निर्वाण पाया था) में प्रतिनिधि शिविर बना था। विचारस्थल (आदि चुनचुनागिरी) माण्ड्या जिले में है। पत्रकारगण ने यशवंतपुर रेलवे स्टेशन तथा बंगलूरू के केम्पेगौडा विमानस्थल से प्रवेश किया। अपने स्वागत भाषण में एच.बी. गौडा, जिन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रधान सचिव दुबारा नामित किया, ने जनपदीय तथा आंचलिक संवाददाताओं की सुरक्षा तथा सुविधा पर विशेष कार्य करने पर बल दिया। इसी विषय पर इसी वर्ष प्रस्तावित सम्मेलन केंद्रित रहेगा। आंध्र प्रदेश यूनियन के अध्यक्ष एस. वीरभद्र राव ने सगरतटीय नगर विशाखापट्टनम में राष्ट्रीय वर्किंग कमेटी की बैठक दिसम्बर माह में आयोजित होने की घोषणा की। प्रतिनिधियों ने कर्नाटक यूनियन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स (के.यू.डब्लू.जे.) के अध्यक्ष एन.राजू और महामंत्री एम.एस. मणि का आभार ज्ञापन किया कि इतना विशाल सम्मलेन इतनी सफलता से आयोजित कराया।

केंद्रीय निर्वाचन अधिकारी डा. देवाशीष बोस (मधेपुरा, बिहार) ने 24 सदस्यीय राष्ट्रीय वर्किंग कमेटी का क्षमता से निर्वाचन कराया। उपस्थित 310 राष्ट्रीय पार्षदों में व्यापक हलचल रही। किन्तु केवल सोलह राज्यों के प्रतिनिधि ही निर्वाचित हुये।

नई राष्ट्रीय वर्किंग कमेटी के चयनित सदस्य हैं: उपाध्यक्ष: गोपाल मिश्र (नई दिल्ली), एस. सुदीशन, कोल्लम-केरल, अनिल दधीच, राजस्थान-जयपुर, तथा प्रवीर बिदेशा, छत्तीसगढ़-रायपुर। झांसी के श्यामबाबू कोषाध्यक्ष पुनः निर्वाचित हुये। छह राष्ट्रीय सचिव हैं: सचिव मुख्यालय विपिन धूलिया (दिल्ली), श्रीमति आर चन्द्रीका, सचिव (दक्षिण) चैन्नई (तमिल नाडु), प्रकाशचन्द्र मिश्र सचिव (पूर्व) भुवनेश्वर (उडीसा), डा. कुमारी मीना पण्ड्या सचिव (पष्चिम) अहमदाबाद (गुजरात), संतोष चतुर्वेदी सचिव (उत्तर) मथुरा (उत्तर प्रदेश) तथा श्रीमती नमिता बोरा सचिव (महिला प्रकोष्ठ) गुवाहाटी (असम)। वर्किंग कमेटी में वरिष्ठ पत्रकारों को विशेष आमंत्रित नामित किया गया है। इनमें ZEE NEWS के वासिन्द्र मिश्र, श्रीमती शान्ता कुमारी (बंगलूर), दैनिक असम ट्रिब्यून के पूर्व संपादक अपूर्व कुमार दास (गुवाहाटी), बीबीसी के पूर्व संवाददाता रामदत्त त्रिपाठी (लखनऊ) और पीएन प्रसन्न कुमार (कोचीन, केरल)। राष्ट्रीय वर्किंग कमेटी में निर्वाचित हुये हैः पी. परमेश्वर राव (आंध्र प्रदेश), ब्रजेश चैबे (छत्तीसगढ़), राम पी. यादव (नई दिल्ली) शाहनवाज हसन (झारखण्ड), मोहम्मद सलीम (केरल), हरि ओम पाण्डेय (मध्य प्रदेश), दशरथ पारेकर (महाराष्ट्र), प्रभाकर शिरोमणि (उडीसा), उपेन्द्र सिंह राठौड़ (जैसलमेर, राजस्थान), बी. प्रदीप कुमार (कोयम्बत्तूर, तमिल नाडू), अभिजीत पाण्डेय, (पटना, बिहार) तथा सुनील थपलियाल (केदारनाथ,

उत्तराखण्ड)। जिन राज्यों को प्रतिनिधित्व नहीं मिला है वहां के सदस्य अपनी इकाई के अध्यक्ष एवं महामंत्री द्वारा अपना नाम प्रस्तावित करा सकते हैं। पांच सीटे और विशेष आमंत्रित का पद संभव है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने राष्ट्रीय संयोजक को नामित किया है। केरल के सीआर रामचन्द्रन को पत्रकार कल्याण विधेयकों की समिति में, हिन्दी-तेलगु दैनिक विशाखा समाचार के संपादक एस. वीरभद्र राव को भाषायी मीडिया प्रकोष्ठ तथा मुदित माथुर को वेतन बोर्ड प्रकोष्ठ। अधिवेशन ने डा.देवाशीष बोस (बिहार) को केंद्रीय प्रमाणन समिति का अध्यक्ष निर्वाचित किया है। इस समिति के दो अन्य सदस्य चैन्नई में नामित होंगे। सेक्रेटरी जनरल मदन गौड़ा ने के. विश्वदेव राव को पुनः "न्यू मीडिया" का प्रभारी नामित किया |

एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव को अंगीकार किया गया। इसमें श्रमजीवी पत्रकार कानून, 1955, को संशोधित कर टी.वी. तथा आनलाइन मीडिया कर्मियों को भी श्रमजीवी पत्रकार करार देने की मांग की गई है। मुदित माथुर द्वारा पेश इस प्रस्ताव का टाइम्स नाऊ (लखनऊ) के संवाददाता प्रांशु मिश्र तथा पूर्व राष्ट्रीय सचिव रामदत्त त्रिपाठी ने समर्थन किया। अल्पसंख्यकों के मानवाधिकारों पर हिसामुल इस्लाम सिद्दीकी की टिप्पणी खास रही। सेवानिवृत्त पत्रकारों हेतु केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय पेंशन स्कीम की भी मांग की गई।

तमिल नाडु यूनियन के अध्यक्ष ए.बी. सगय राज ने बताया कि गत वर्ष आई बाढ़ विभीशिका में जिन श्रमजीवी पत्रकारों ने राहत काम किया उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जायेगा। उसी समय (जून के अन्तिम सप्ताह में) आई.एफ.डब्लू.जे. की नई राष्ट्रीय परिषद का प्रथम अधिवेशन भी चेन्नई में आयोजित होगा। महाबलीपुरम तथा कांची ले जाया जायेगा | कोषाध्यक्ष श्यामबाबू ने विगत वर्षों के आडिटेड लेखाजोखा प्रस्तुत किया जिसे अंगीकृत किया गया। दिल्ली में रजिस्ट्रार ऑफ ट्रेड यूनियंस के कार्यालय में दाखिल कर दिया गया है। प्रधान सचिव मदन गौडा ने राज्य इकाईयों से आग्रह किया है कि 31 दिसम्बर 2015 तक की सदस्यता सूची तथा शुल्क आई.एफ.डब्लू.जे. मुख्यालय को शीघ्र प्रेषित कर दें।

होली की शुभ कामनाओं के साथ।

आपका साथी

विपिन धूलिया
राष्ट्रीय सचिव (मुख्यालय)